अजनबी औरत के साथ तन्हाई हराम हे

हज़रत मुफ्ती अहमद खानपुरी दब.

नोट: आप से दरखास्त है की इसे भाषा या ग्राम्मर का अदब ना समझे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

एक माकन जहा अजनबी औरत हो तो कोई अजनबी मर्द उस्के साथ तन्हाई के अन्दर न मिले इस्को शरीअत ने हराम करार दिया हे और रसूलुल्लाहﷺ ने भी बडी ताकीद से मना फरमाया हे. यहा सूरे अहज़ाब की वो आयत पेश की हे जो परदे के सिलसिले मे नाज़िल हुयी जिस मे सहाबा को हुकम दिया गया के रसूलुल्लाहﷺ की पाक बीवियो से कोई सामन लेने की ज़रूरत हो तो सामने जाकर न ले, बल्कि परदे की आड मे से ले कभी ऐसा होता हे के घर मे से कोई बर्तन लेना होता हे या ज़रूरत की कोई चीज़ माँगनी पडती हे जैसे घर मे से दूध का बर्तन मांगना पडा और घर मे कोई मर्द नहीं होता इसलिये औरतो से ये चीज़ मांगने की ज़रूरत पेश आती हे ऐसे मौके पर दोनों इस तरह आमने सामने हो के एक दुसरे को देख रहे हो इस की इजाज़त नहीं हे.

यहा मुफस्सिरिन लिखते हे के ये हुकम उस जमात को दिया जा रहा हे जो उम्मते मुहम्मदिया मे सब से

ज़ियादा पाकीज़ा जमात यानि सहाबा हे और जिन के मुताल्लिक हुकम दिया जा रहा हे वो रसूलुल्लाहﷺ की पाक बीविया हे जो उम्मत की माँए हे जिन से ज़ियादा पाकीज़ा औरते और कही नहीं मिल सकती उस्से इस हुकम का अंदाज़ा लगाया जा सकता हे.

आज कल लोग कहते हे के इस तरह आमने सामने होने मे क्या हरज हे जब के हमारा दिल तो पाक हे हमारे दिल मे तो कोई मेल नहीं हे तो नावुज़ूबिल्लाह (हम अल्लाह की पनाह चाहते) यहाँ जो हुकम दिया जा रहा हे वो भी फायदा हे? इसलिये के इस हुक्म का जो फायदा वो इस आयत मे बतलाया जा रहा हे इस पर गौर करने की ज़रूरत हे अल्लाह ताला फरमाते हे ये चीज़ तुम्हारे दिलो को और इन्के दिलो को पाक रखने वाली हे किसी मर्द के सामने कोई अजनबी औरत आये और दिल मे वस्वसा न आये ये हो नहीं सकता, कैसा ही पाकीज़ा आदमी क्यू न हो दिल के वस्वसे (ख्याल) से तो वो भी बच नहीं सकता इसलिये यहाँ इस्का खास एहतिमाम कराया गया के कोई चीज़ लेने की ज़रूरत पेश आये तब भी परदे की आड मे ली जाये जब इस्का हुकम दिया गया तो तन्हाई मे मिलने की इजाज़त कहा दी जायेगी?

हजरत उक्बाह बिन आमिर (रदी) फरमाते हे रसूलुल्लाहﷺ ने इरशाद फरमाया- अजनबी औरतो के पास तन्हाई मे जाने से बचो एक अंसारी सहाबी ने

अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! "देवर" यानि शौहर के भाई के बारे मे क्या फरमाते हे? इससे भी तन्हाई मे मिलने से बचना ज़रूरी हे? रसूलुल्लाहﷺ ने इरशाद फरमाया देवर से बचना तो ऐसा ज़रूरी हे जैसे मौत से बचा जाता हे. शौहर के रिश्तेदार शौहर का बडा या छोटा भाई भतीजा या चाचा ज़द भाई मुराद हे.

रिवायत मे हे के अगर उस औरत का शौहर सगा भाई, बेटा, बाप, वहा मौजूद हो तो इस सूरत मे घर मे दाखिल हो सकते हे लेकिन अगर घर मे मरहम न हो और वो औरत घर मे तनहा अकेली हो तो इस सूरत मे शरीअत इजाज़त नहीं देती के कोई मर्द इस घर मे दाखिल हो.

देवर और दुसरे रिश्तेदार जैसे शौहर का बडा भाई या छोटा भाई उस्के चाचा ज़द भाई या भतीजे वगैरह के साथ तन्हाई की नौबत आये उससे बचना ऐसा ही ज़रूरी हे जैसे मौत से बचा जाता हे इसलिये के ये सब तो घर के लोग हे दुसरे लोगो के लिए तन्हाई इख्तियार करना इतना आसान नहीं होता इसलिये के जब लोग देखेंगे तो पूछेंगे के इस के घर मे क्यों गया था? लेकिन ये सब घर के लोग होने की वजह से उन के मुताल्लिक कोई ऐसा सोचेगा भी नहीं और अगर खुदा न खस्ता कोई ऐसी वैसी बात पेश आगयी तो "घर का भेदी लंका ढाये" जैसा मसाला हो जाएगा

इन से जितना खतरा हो सकता हे वो ज़ाहिर हे और उस्के नतीजे मे जो बुराई पैदा होगी वो ऐसी होगी के रूकने का नाम न लेगी और आज कल तो ऐसी बोहोत सी शिकायते आती रहती हे हुजूरﷺ ने इससे बचने की बडी ताकीद फरमाई हे.

आज काल हमारा समझ बे-पर्दगी का इतना ज़ियादा शिकार हो चूका हे के अगर कोई बेचारी दीनदार लडकी किसी के घर मे बहु बन कर जाती हे और वो अपने शौहर के भाई से पर्दा करती हे तो सास इससे नाराज़ हो जाती हे और इस्को 'ताना' देती हे और इससे झगडा करती हे सास कहती हे के अच्छा अब तू मेरे ही बेटो से पर्दा करेगी? इन्ही से तुझे खतरा लगता हे "नावुज़ूबिल्लाह" अल्लाह के रसूल जिस के बारे मे ये फरमाते हे के शौहर का भाई मौत का दर्जा रखता हे और एक औरत उससे बचने का एहतिमाम करती हे तो उसे 'ताना' दिया जाता हे फिर इस की वजा से सास अपनी बहु की दुश्मन बन जाती हे और इस्को तरह तरह से परेशान करती हे बल्कि बाज़ जगह तो यहाँ तक सुनने मे आया के वो अपने बेटो से कहती हे के उसे तलाक दे कर अलग कर दो, हमारी ये जहालत मुआशरे और समाझ को कहा तक पोहचने वाली हे इसलिये इन चीज़ो का जान-ना और अपने घर वालो ऐसे मसाइल का बताना बेहद ज़रूरी हे.

हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रदी) फरमाते हे के रसूलुल्लाहﷺ ने इरशाद फरमाया- तुम मे से कोई किसी औरत के साथ तन्हाई मे न रहे, मगर ये के उस का मरहम वह मौजूद हो.

अगर उस का शौहर वह मौजूद हे तब तो ठीक हे वार्ना उसका बाप, भाई, भांजा, वगैरह कोई न कोई मरहम वह मौजूद हो तब ही उसको मिले, और बातचीत करे, इस के बगैर कोई आदमी तन्हाई मे किसी औरत के साथ न रहे.

हजरत बुराइडा (रदी) फरमाते हे रसूलुल्लाहﷺ ने इरशाद फरमाया- मुजाहिदीन की औरतो की हुरमत इन लोगो पर जो घरो मे हे अपनी माँ-ओ की हुरमत की तरह हे जो लोग घरो पर हे और जिहाद मे जाने वाले किसी आदमी के घर वालो की ज़रूरते पूरी करने उसके घर पर जाते हे फिर इस बुन्याद पर (आँख लड गयी और गलत ताल्लुक काइम कर के) खयानत की उन को कयामत के दिन खडा किया जायेगा (और जो आदमी अल्लाह के रास्ते मे गया था उससे) कहा जायेगा तू इस की नेकियों मे से जितनी चाहे ले ले, यहाँ तक के तेरा दिल खुश हो जाये. हजरत बुराइडा (रदी) फरमाते हे ये इरशाद फरमा कर रसूलुल्लाहﷺ हमारी तरफ मुतवज्जेह हुवे और फरमाया तुमहारा क्या ख्याल (यानी क्या वो किसी भी तरह की कमी पर राज़ी होगा).

जिहाद जो लोग दीन की निस्बत पर कही सफर पर जाते हे जैसे तबलीग जमात मे निकलते हे या जिहाद मे निकलते हे और आम तौर पर उस ज़माने मे जिहाद ही का सिलसिला जारी था इसलिये घर मे मर्द नहीं होता और जाने वाला भी ये समझ कर के अमानतदारी से दोस्ती का हक निभाएगा खुद ही कह जाता हे मेरे घर की ज़रूरतों ख्याल रखना अगर कुछ बाज़ार लाना हो या बहार से किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो पूरी कर देना और इस निस्बत पर घर पर आना जाना हो तो ऐसे आदमी को चाहिए के जिस तरह अपनी माँ की इज़्ज़त आबरू और हुरमत का लिहाज़ करता हे इसी तरह सफर मे जाने वालो की औरतो की हुरमत का भी लिहाज़ रखे.

तुम्हारा क्या ख्याल हे का मतलब ये हे के अगर हमारे सामने बहुत साडी दौलत राखी जाये और वो भी ऐसे मौके पर जब के हमे उसकी सख्त ज़रूरत हो और फिर कहा जाये इस मे जितना चाहो ले लो तो हम उस मे से कुछ भी छोडेंगे? कुछ भी नहीं छोडेंगे बल्कि सब ही ले लेन्गे, मतलब ये हे वो उस की कोई नेकी नहीं छोडेगा.

हवाला: हदीस के इस्लाही मज़ामीन उर्दू से इस्का खुलासा लिप्यान्तरण किया गया हे.